सता पर आसीन व्यक्ति का लक्ष्य सेवा का रहे - आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 11 अगस्त, 2010

जो व्यक्ति अपने लिए या दूसरों के लिए पुत्र की, धन की आकांक्षा नहीं करता और अधर्म के द्वारा अपने राज्य को बढ़ाने वाला नहीं होता है वह धार्मिक व शीलवान व्यक्ति होता है।

उक्त विचार आचार्यश्री महाश्रमण ने तेरापंथ भवन में मंगलवान को धम्मपद की व्याख्या करते हुए व्यक्त किये।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि आदमी के मन में धन पाने का लक्ष्य होता है और दुनिया में मनुष्य को सम्मान व पद पाने को लालसा भी होती है इस लालसा के कारण वह अधर्म भी कर लेता है। मनुष्य में धर्म द्वारा आजीविका पाने का लक्ष्य रहे धर्म जिसमें नैतिकता, प्रमाणिकता हो किसी का शोषण नहीं होता है वह धर्म होता है।

उन्होंने यह भी कहा कि जो व्यक्ति महान साधक होता है अर्थात महान साधना, तप करता है उसका ध्यान केवल आत्मा की ओर ही होता है। एक साधु के लिए भी यह आवश्यक है कि वह धर्म की आराधना करे वह मोह माया, धन में न फंसे आत्मा को प्रमुख मानकर साधना करनी चाहिए। उन्होंने श्रावकों की ओर इंगित करते हुए कहा कि एक श्रावक को बारहव्रती होना चाहिए उन्हें बारह व्रत जो धर्म के हैं वे स्वीकार करने चाहिए। मनुष्य की आकांक्षा यह रहे कि उसकी आत्मा की निर्मलता बढ़े।

आचार्यश्री ने कहा कि वतमान में चुनाव का समय है चुनाव भी प्रमाणिकता से हो और जो पद पर, सत्ता पर आसीन होता है उसे जनता की सेवा करने का लक्ष्य रखना चाहिए, सत्ता पर आना उस व्यक्ति का कल्याणकारी होता है जो जनता की तहे दिल से सेवा करता है, जो सत्ता पर आने के बाद एसो, आराम नहीं करता जनता की सेवा करने का मुख्य उद्देश्य रहता है जिससे जनता का भी कल्याण होता है और उसकी आत्मा का भी कल्याण होता है।

इस अवसर पर चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी, स्वागताध्यक्ष बिमलकुमार नाहटा, स्थानीय सभा के अध्यक्ष अशोक कुमार नाहटा, सभा मंत्री करणीदान चिण्डालिया, सभा के उपाध्यक्ष पीरदान बरमेचा आदि कई गणमान्य व्यक्ति विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का तीसरा दिन

स्थानीय बुच्चा गेस्ट हाउस में चल रहे पांच दिवसीय शिविर के तीसरे दिन प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किशनलाल ने कहा कि व्यक्ति विकास चाहता है किंतु उसके विकास में बाधक तत्व अहंकार है उसे छोड़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि जब भगवान महावीर से पूछा गया कि प्राणी बार-बार जन्म और मृत्यु को क्यों प्राप्त करता है तो इसके जवाब में भगवान महावीर ने कहा कि मनुष्य माया, लोभ के कारण बार-बार जन्म लेता है और फिर मृत्यु को प्राप्त करता है। उन्होंने कहा कि अगर जन्म और मृत्यु से छुटकारा पाना है तो जीवन विज्ञान के प्रयोगों को सिखना चाहिए। जीवन विज्ञान के प्रयोग में महाप्राण ध्वनि, दीर्घश्वास प्रेक्षा और ज्योति केन्द्र पर ध्यान करने की प्रक्रिया है। ध्यान के द्वारा बाधक तत्वों को दूर कर अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं। इस शिविर में निर्देशन डॉ. ललित कुमार, डॉ. अंशुमान शर्मा हैं, हनुमान शर्मा आदि हैं। मध्यान्ह में बजरंग जैन शिविरार्थियों को संबोधित करते हैं, शिविर के प्रायोजक पोकरमल चिमनमल बुच्चा है, शिविर की व्यवस्था की जिम्मेवारी गिरजाशंकर दुबे की है।